देश के प्रथम इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वर्या

शशि कुमार सैनी
रूड़की।

ब्रिटेन में एक ट्रेन द्रुत गति से दौड़ रही थी। ट्रेन अंग्रेजों से भरी हुई थी। उसी ट्रेन के डिब्बे में अंग्रेजों के साथ एक भारतीय भी बैठा हुआ था।

डिब्बा अंग्रेजों से खचाखच भरा हुआ था व सभी उस भारतीय का मजाक उड़ाते जा रहे थे। कोई कह रहा था, देखो कौन नमूना ट्रेन में बैठ गया तो कोई उनकी वेशभूषा देखकर उन्हें गंवार कहकर हंस रहा था। कोई तो इतने गुस्से में था कि ट्रेन को कोसकर चिल्ला रहा था, एक भारतीय को ट्रेन में चढ़ने क्यों दिया? इसे डिब्बे से उतारो।

किन्तु उस धोती–कुर्ता, काला कोट एवं सिर पर पगड़ी पहने शख्स पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह शांत गम्भीर बैठा था, मानो किसी उधेड़–बुन में लगा हो।

ट्रेन द्रुत गति से दौड़े जा रही थी और अंग्रेजों का उस भारतीय का उपहास, अपमान भी उसी गति से जारी था। किन्तु यकायक वह शख्स सीट से उठा और जोर से चिल्लाया "ट्रेन रोको"। कोई कुछ समझ पाता उसके पूर्व ही उसने ट्रेन की जंजीर खींच दी। ट्रेन रूक गई।

अब तो जैसे अंग्रेजों का गुस्सा फूट पड़ा। सब उसको गालियां दे रहे थे। गंवार, जाहिल जितने भी शब्द शब्दकोश में थे, बौछार कर रहे थे। किन्तु वह शख्स गम्भीर मुद्रा में शांत खड़ा था। मानो उस पर किसी की बात का कोई असर न पड़ रहा हो। उसकी चुप्पी अंग्रेजों का गुस्सा और बढ़ा रही थी।

ट्रेन का गार्ड दौड़ा–दौड़ा आया। कड़क आवाज में पूछाः– "किसने ट्रेन रोकी"?

कोई अंग्रेज बोलता उससे पहले ही, वह शख्स बोल उठा'– "मैने रोकी श्रीमान"

पागल हो क्या पहली बार ट्रेन में बैठे हो? तुम्हें पता है, बिना कारण ट्रेन रोकना अपराध हैः– "गार्ड गुस्से में बोला"

हां श्रीमान ज्ञात है किंतु मैं ट्रेन न रोकता तो सैकड़ों लोगों की जान चली जाती।

उस शख्स की बात सुनकर सब जोर–जोर से हंसने लगे। किंतु उसने बिना विचलित हुये, पूरे आत्मविश्वास के साथ कहाः– करीब एक फरलांग (220 गज) की दूरी पर पटरी टूटी हुई है। आप चाहे तो चलकर देख सकतें हैं।

गार्ड के साथ वह शख्स और कुछ अग्रेज सवारी भी साथ चल दी। रास्ते भर भी अंग्रेज उस पर फब्तियां कसने में कोई कोर–कसर नहीं रख रहे थे। किंतु सबकी आंखे उस वक्त फटी की फटी रह गई जब वाकई, बताई गई दूरी के आस–पास पटरी टूटी हुई थी। नट–बोल्ट खुले हुए थे। अब गार्ड सहित वे सभी चेहरे जो उस भारतीय को गंवार, जाहिल, पागल कह रहे थे। वे सभी उसकी ओर कौतूहलवश देखने लगे। मानो पूछ रहे हों आपको ये सब इतनी दूरी से कैसे पता चला??...

गार्ड ने पूछाः–तुम्हें कैसे पता चला, पटरी टूटी हुई है? उसने कहा–जब सभी लोग ट्रेन में अपने–अपने कार्यों में व्यस्थ थे। उस वक्त मेरा ध्यान ट्रेन की गति पर केन्द्रित था। ट्रेन स्वाभाविक गति चल रही थी। किन्तु अचानक पटरी की कम्पन से उसकी गति में परिवर्तन महसूस हुआ। ऐसा तब होता है, जब कुछ दूरी पर पटरी टूटी हुई हो। अतः मैंने बिना क्षण गंवाए, ट्रेन की जंजीर खींच दी। गार्ड और वहां खड़े अंग्रेज दंग रह गये। गार्ड ने पूछाः–इतना बारीक तकनीकी ज्ञान, आप कोई साधरण व्यक्ति नहीं लगते। अपना परिचय दीजिये।

शख्स ने बड़ी शालीनता से जवाब दियाः–मैं इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वर्या....

जी हां वह असाधरण शख्स कोई और नहीं डॉ. विश्वेश्वर्या थे। जो देश के "प्रथम इंजीनियर" थे।